

[Shri Sarada Mohanty]

provement due to the damages caused by the flood. It is estimated that more than Rs. 1, 000 crores would be required for this purpose.

The State Government has moved the Centre for its assistance. The honourable Prime Minister visited this flood-affected area and promised to allocate Rs. 50 crores, but nothing has been done as yet.

I am sorry that my friend, Shri Lenka, has given wrong information to the august House with a political motive. The Government of Orissa took prompt action to rehabilitate the flood-and-rain-affected people, and relief work was done immediately. Shri Biju Patnaik, the Chief Minister asked two of his Cabinet Ministers to proceed to the spot and take all necessary action for relief work, and they are there till now.

Sir, I urge upon the Central Government to give sufficient monetary assistance to the State of Orissa, which is backward, to overcome the damages caused by rain and flood. Thank you, Sir.

Incidents in Lucknow-Delhi Mail on 6th January, 1991

मौलाना अबुदुल्ला खान आजमी (उत्तर प्रदेश) : मिस्टर वाइस चेयरमैन साहब, मैं आपके जरिए हाउस का ध्यान 6 जनवरी, 1991 को "लखनऊ ने दिल्ली" गाड़ी के मुसाफिरों की समस्याओं और परेशानियों की तरफ दिलाना चाहता हूँ।

मिस्टर वाइस चेयरमैन साहब, 6 जनवरी को पालियामेंट के इजलास में शिफ्ट के लिए रात में 10.00 बजे लखनऊ मेल, दिल्ली के लिए जो रवाना होता है, उसमें मैं और जनाब सिन्हा रजी साहब, एम पी, एक ही साथ सफर कर रहे थे। हमने स्टेशन पर जो कुछ देखा और हमारी मौजूदगी में जो कुछ हुआ, उस पर हम हाउस की तबज्जो दिलाना चाहते हैं।

मिस्टर वाइस चेयरमैन, दुर्घटना और आम मुसाफिरों के हक पर डकैती और जुल्म करने वाले, भारतीय कानून के दुश्मनों के हमलों की जानकारी मैं आपके जरिए हुकूमत को तफसील के साथ देना चाहूंगा। लखनऊ मेल में एक श्री टायर बोगी पर अयोध्या से वापसी पर अपने को कार-सेवक कहने वालों ने जबर्दस्ती कब्जा कर लिया था। उस श्री टायर बोगी में जिन मुसाफिरों का पहले से रिजर्वेशन था, वे लोग जबर्दस्त ठंडक में प्लेटफार्म पर खड़े रहे, रेलवे के अधिकारियों से अपनी सीटों की आजादी की फरियाद करते रहे और रेलवे स्टेशन पर अधिकारियों की तरफ से लाउड स्पीकर पर मुसलसल अनाउंस होता रहा "कि रेलवे पुलिस से अपील की जाती है कि एक बोगी पर कार-सेवकों ने जबर्दस्ती कब्जा करके मुसाफिरों को परेशान कर रखा है। तमाम कार-सेवकों को बोगी से निकाल दिया जाए, जो गैर कानूनी तौर पर मुसाफिरों का हक छीन रहे हैं"। थोड़ी देर के बाद पुलिस और कार-सेवकों में झड़पें हुईं मगर कार-सेवकों ने रिजर्वेशन करवाए हुए मुसाफिरों की सीट छीनने से कतई इन्कार कर दिया। आखिरकार रेलवे ने ऐलान किया कि "जो लोग अपने-अपने टिकट लिए हुए हैं, टिकट को वापस करके स्पष्ट वापिस ले लें और अपने-अपने घरों को चले जाएं"। मुसाफिरों में ऐसे लोग भी थे श्रीमान, जिन्हें अपने बीमार रिश्तेदारों से दिल्ली पहुंचकर फौरन राबता कायम करना था। उन्हीं मुसाफिरों में ऐसे लोग भी थे जिन्हें दिल्ली पहुंचकर फौरन एयरपोर्ट पहुंचकर मुल्क के दूसरे शहरों में अपने बिजनेस, तिजारत और दूसरी जरूरियात के लिए परवाज करना था। कानून और अमन के दुश्मनों ने लाई एण्ड आर्डर की धाड़ियां लखनऊ मेल पर बिखेर दी थीं और कानून के मुहाफिज पुलिस के लोग बेबस और मजबूर, तमाशाई बने देख रहे थे। ऐसे लोगों को कार-सेवक कहा जाता है तो फिर बेकार सेवक की क्या परिभाषा होगी। अगर इस तरह की हरकतों पर पाबंदी नहीं लगायी गयी तो मुल्क की हुकूमत से अबाम का एतमाद यकसर उठ जायेगा और पूरा देश जहनुम बन

जायेगा। पिछले दिनों इसी तरह के कार-नेवकों ने जौनपुर के पास तीन मासूम बच्चियों को चलती ट्रेन से फेंक कर अपनी जानवर होने का सबूत दिया था जिसमें एक नन्हों सी बच्ची भी मौके ही पर शहीद हो गयी थी। हुकूमत से आपके माध्यम से मांग है कि तमाम रिजर्वेशन डिब्बों में हिन्दुस्तानी मुसाफिरों और बाहर से भी आने वाली इसी देश की ट्रेनों में सफर करते हैं उन तमाम मुसाफिरों की हिफाजत के लिये फोर्स लगायी जाये ताकि मुसाफिरों को इस तरह की मुसी-बतों का सामना न करना पड़े। इस गंदे खेल को जितनी जल्दी हो हुकूमते हिंद की जिम्मेदारी है कि उसे बंद कर देना चाहिये। जो हुकूमत संक्युलरिज्म को बचाने की दावेदार है, देश के आम इंसान की जानोमाल की हिफाजत भी इस हुकूमत को पूरी तरह करनी चाहिये।

आखिर में मैं यह कहना चाहूंगा कि :

“हवा यही जो रहेगी तो ए नकीबे बहार।
कहां से आयेंगी रानाईयां चमन के लिये।”

इस वक्त मेरी खुशनसीबी है कि हाउस में माननीय श्री सुबोध कान्त जी तशरीफ फरमाए हैं और उनके महकमे से मुताल्लिक यह जिम्मेदारी आयद होती है। जिस तरह से मुसाफिर गैर हिफाजती तौर पर चल रहे हैं, आज हम लोगों की यह बदनसीबी है कि मुल्क के लोगों को न दिन में इस बात का यकीन है, न रात में इस बात का यकीन है कि घर से निकलने के बाद क्या वह घर हिफाजत के साथ वापिस आ पायेंगे? वर्जरे दाखिला की यह जिम्मेदारी है कि निहायत जिम्मेदारी के साथ लॉ एंड आर्डर जिसे तबाह और बर्बाद करके रख दिया है उस पर कड़ी निगरानी रखें और मुजरिमों को कैफरे किरदार तक पहुंचाये वरना देश का भविष्य तबाह हो जायेगा और इस तरह के उग्रवादियों की आवाज और इस तरह से उग्रवादियों का जुलम जम्हूरियत की आवाज को दबा लेगा तो हिन्दुस्तान की तारीख को दुनिया अच्छे अल्फाज से याद नहीं करेगी। शुक्रिया।

†[مولانا عبود اللہ خان اعظمی
(اتر پردیہ): مسٹر وائس چورمہن
صاحب میں آپ کے ذریعے ہاؤس کا
دھیان ۶ جنوری ۱۹۹۱ کو دہلکھلو
سے دلی، رزی کے مسافروں کی
سمسیاؤں اور پریشانیوں کی طرف
دلانا چاہتا ہوں۔

مسٹر وائس چورمہن صاحب -
۶ جنوری کو پارلیمنٹ کے اجلاس
میں شرکت کھلئے رات میں ۱ بجے
لکھلو میل دلی کھلئے روانہ ہوتی
ہے۔ اسمیں میں اور جناب سبطرہی
صاحب - ایم - بی - ایک ہی ساتھ
سفر کر رہے تھے - ہم نے اسٹیشن پر
جو کچھ دیکھا اور ہماری موجودگی
میں جو کچھ ہوا اس پر ہم ہاؤس
کی توجہ دلانا چاہتے ہیں۔

مسٹر وائس چورمہن - درکھٹنا
اور عام مسافروں کے حق پر لکھتی
اور ظلم کرنے والے - بھارتیہ قانون کے
دشمنوں کے حملوں کی جانکاری میں
آپ کے ذریعے حکومت کو تفصیل کے
ساتھ دینا چاہوگا - لکھلو میل ایک
تھری ٹائر ہوگی پر ایوڈھیہ سے ایسی
پر ایپے کو کار سیوک کھلئے والوں نے
زبردستی قبضہ کر لیا تھا - اس
تھری ٹائر ہوگی میں جن مسافروں
کا پہلے سے رزرویشن تھا - وہ لوگ
زبردستی ٹھنڈک میں پلٹتے فارم پر

†Transliteration in Arabic Script.

کھڑے رہے۔ ریلوے کے انجینئریوں سے
ایلی سیٹوں کی آزادی کی فرمائش
کرتے رہے۔ اور ریلوے اسٹیشن پر
انجینئریوں کی طرف سے ٹوٹے ہوئے
مسلسل انڈس ہوتا رہا۔ دیکھو
پولیس سے ایبل کی جاتی ہے کہ
ایک ہوگی پر کار سیوکوں نے زبردستی
قبضہ کر کے مسافروں کو پریشان کر
دکھا ہے۔ تمام کار سیوکوں کو ہوگی
سے نکال دیا جائے۔ جو غیر قانونی
طور پر مسافروں کا حق چھین رہے
ہیں۔ تہہ ذی دیر کے بعد پولیس
اور کار سیوکوں میں جھڑپیں ہوئیں
مگر کار سیوکوں نے رزرویشن کروائے
ہوئے مسافروں کی سیٹ چھڑنے سے
قطعاً انکار کر دیا۔ آخر کار ریلوے نے
اعلان کیا کہ جو لوگ اپنے اپنے ٹکٹ
لئے ہوئے ہیں۔ ٹکٹ واپس کر کے
دوڑے واپس لے لیں اور اپنے اپنے
گھروں کو واپس چلے جائیں۔
مسافروں میں ایسے لوگ بھی تھے۔
شریمان۔ جنہیں اپنے بیمار رشتہ داروں
سے دلی پہونچکر فوراً رابطہ قائم
کرنا تھا۔ انہوں نے مسافروں میں
ایسے لوگ بھی تھے جنہیں دلی
پہونچکر فوراً ایئرپورٹ پہونچکر ملک
کے دوسرے شہروں میں اپنے بڑے۔
تجارت اور دوسری ضروریات کے لئے
پرواز کرنا تھا۔ قانون اور امن کے
دشمنوں نے لا اینڈ آرڈر کی انتظامیہ

نہ مل رہی تھی۔ اور
قانون کے محافظ پولیس کے لوگ
بے بس اور محدود۔ تماشائی بنے
دیکھ رہے تھے۔ ایسے لوگوں کو
کار سیوک کہا جاتا ہے پھر بے کار سیوک
کی کہا پریمہاشا ہوگی۔ اگر اس
طرح کی حرکتوں پر پابندی نہیں
لگائی گئی تو ملک کی حکومت سے
عوام کا اعتماد یکسر اٹھ جائے گا۔ اور
پورا دیس جہلم بن جائے گا۔ پچھلے
دنوں اسی طرح کار سیوکوں نے جونپور
کے پاس تین معصوم بچوں کو
چلتی تریں سے پھینک کر اپنے
جانور ہونے کا ثبوت دیا تھا۔ جسمیں
ایک لڑکی سی بچی بھی موقع ہی
پر شہید ہو گئی تھی۔ حکومت
سے آپ کے مادیہم سے مانگ ہے کہ
تمام رزرویشن تہوں میں ہندوستانی
مسافر اور باہر سے بھی آنے والے اسی
دیس کی تریں میں سفر کرتے
ہیں ان تمام مسافروں کی حفاظت
کھائے فورس لگائی جائے۔ تاکہ
مسافروں کو اس طرح کی مصیبتوں
کا سامنا نہ کرنا پڑے۔ اس گندے
کھیل کو جلدی ہو حکومت
ہند کی ذمہ داری ہے کہ اسے بند
کر دینا چاہئے۔ جو حکومت
سہولتوں کو بچانے کی ذمہ دار ہے
دیہی کے تمام انسان کی جان و مال
کی حفاظت بھی اس حکومت کو
پوری طور پر کرنی چاہئے۔

آخو مہن - میں یہ کہنا چاہوں گا
کہ :

”دھوا رہی چورہ کی تو اسے نقیب بہار
کہاں سے انہیں کی رعنائیاں چمن کیلئے۔“

اس وقت میری خوش نصیبی
ہے کہ ماؤس مہن مانیئے شری
سہوٹ کاٹھ جی تشریف فرما ہیں۔

اور انکے محکمے سے متعلق یہ
ذمہ داری مٹد ہوتی ہے۔ جس طرح
سے مسافر غیر حفاظتی طور پر چل
رہے ہیں۔ آج ہم لوگوں کی یہ
بد نصیبی ہے۔ کہ ملک کے لوگوں
کو نہ دن میں اس بات کا یقین ہے
نہ رات میں اس بات کا یقین ہے کہ
گھر سے نکلنے کے بعد کہا وہ گھر
حفاظت کے ساتھ واپس آ پائیں گے۔
وزیر داخلہ کی یہ ذمہ داری ہے کہ
رہائیت ذمہ داری کے ساتھ اپنی

جسے ڈیہا و بیان کر کے رکھ دیا ہے
اس پر کڑی نگرانی رکھیں اور
مستحقوں کو کھیر کردار تک پہنچائیں
ورنہ دیش کا بھوشیہ تپہا ہو جائے گا۔
اور اس طرح کے اگروائیوں کی آواز
اور اس طرح سے اگروائیوں کا ظلم
جمہوریت کی آواز کو دبا لے گا تو
ہندوستان کی تاریخ کو دنیا اچھے
[لفظ سے یاد نہیں کرے گی - شکریہ]

श्री आनन्द प्रकाश गौतम (उत्तर प्रदेश):
मैं भी इसके साथ अपने आपको सम्बद्ध
करते हुए माँग करता हूँ कि इस घटना
की पूरी-पूरी जाँच और उसके खिलाफ
कार्यवाही होनी चाहिये क्योंकि मैं भी उस
रेले में सफर कर रहा था।

एक सम्मानित सदस्य : उसी डिब्बे में या
उसी ट्रेन में... (व्यवधान)

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) :
डिब्बे में नहीं थे मान्यवर उपसभाध्यक्ष महो-
दय । जब जेबकतरा जेब काटकर भीड़ में
भागता है और लोग चोर चोर चिल्लाने लगते
हैं तो वह जेबकतरा सबसे पहले भागता
लगता है--चोर, चोर, चोर। हमारा
क्या पता है यह और ही लोग हों बदनाम
करने वाले कारसेवकों को ।

मौलाना अबुलकुल्ला खान आजमी :
इसलिये मैं अर्ज करना चाहता हूँ कि सर,
उस पर बाकायदा कार सेवकों ने कार
सेवक लिख दिया था और अगर वह
चोर ही थे तो उन्होंने अपनी टोपी के
जरिये बताया था कि वह किस तरह के
चोर हैं.... (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह) :
ठीक है, आपकी बात खत्म हो गयी ।

[شری عابد اللہ خان اعظمی :

اسی لئے میں عرض کرنا چاہتا ہوں
کہ سر - اس پر باقاعدہ کارسیوکوں
نے کارسیوک لکھ دیا تھا اور اگر وہ
چور ہی تھے انہوں نے اپنی ٹوپی کے
ذریعے بتایا تھا کہ وہ کس طرح کے
چور ہیں... (مداخلت)]

مौलانا अबुलकुल्ला खान आजमी: और
जिस तरह का कपड़ा पहन रखा था उस
पर लिख रखा था और उस पर भी
बताया था कि यह किस तरह के चोर हैं।
उस पर कार सेवक लिखा हुआ था और
बाकायदा ट्रेन के डिब्बे को जिस तरह से
कोई पैसा देकर के अपने तौर पर स्पेशली
बुक कराता है... (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष : नहीं-नहीं, आपकी बात
पूरी हो गयी ।

Transliteration in Arabic Script.

†[مولانا عبید اللہ خاں اعظمی :

اور جس طرح کا کہو! پہن رکھا تھا اس پر لکھ رکھا تھا اور اس پر بھی بتایا تھا کہ یہ کس طرح کے چور ہیں۔ اس پر کارسیوں لکھا ہوا تھا اور بالاعدہ تدرین کے ذریعے کہ جس طرح سے کوئی پیسہ دیکر کے اپنے طور پر اس پیشگی بک کرانا ہے۔ . . . (مداخلت)

مولانا ابوبکر لا خان آجملی :
اس طرح سے देश की सम्पत्ति का भी तुक-
सनि किया गया और देश के कानून की
शक्ति का भी। मैं चाहूंगा वर्जारे दाखिला
इत सिलसिले में फौरन तौर पर एक
बयान देकर तमाम हाउस को मुतमाईन करें
कि आर्यदा इस सिलसिले में वह क्या
कार्यवाही करना चाहते हैं ? श्री सुबोध
कान्त जी यहां मौजूद हैं। उनसे चाहूंगा
कि वह अपना बयान दें और यकीन दिलायें
कि मुक्त के लोगों को ट्रेन में अपनी फोर्स
के जरिये किस तरह की सविधा देते हुए
लोगों की हिफाजत की जिम्मेदारी लेना
चाहते हैं।

†[مولانا عبید اللہ خاں اعظمی :

اس طرح دیس سے دیس کی سمپتی
کا بھی نقصان کیا گیا اور دیس کے
قانون کی کوریم کا بھی۔ میں
چاہوں گا وزیر داخلہ اس سلسلہ میں
فوری طور پر ایک بیان دیکر تمام
هاؤس کو مستعد کریں کہ انڈیا
اس سلسلہ میں وہ کیا کارروائی کرنا
چاہتے ہیں۔ شری سوبودھ کانت
سہائے جی یہاں موجود ہیں۔ ان سے
چاہوں گا کہ وہ اپنا بیان دیں اور

Demand for early decision on pension
Scheme for working Journalists

SHRI KAPIL VERMA (Uttar Pradesh);
Mr. Vive-Chairman Sir, I am grateful to you
for giving me an opportunity to raise an
important issue.

The working journalists are greatly
concerned about the inordinate delay on the
part of the Government in enforcing a pension
scheme for working journalists and other
employees of news agencies in the country.

The matter is under consideration since
February, 1988 when the then Finance
Minister, Mr. N. D. Tewari announced the
Government's intention to frame such a
scheme. An expert committee was appointed
after several months, and it submitted its
report in June, 1989 making definite proposals
for framing a scheme of pension for working
journalists and other employees of newspapers
and news agencies.

After sitting on the report for some time)
the Government announced that a pension
scheme would be framed for all categories of
industrial employees and not merely
journalists and other employees of newspaper
agencies. But this requires a lot of preparatory
work that will take a long time. The result is
that neither journalists nor other industrial
workers will get the pension at an early date.
Thus the elements opposed to the grant of
such pension for journalists have succeeded in
sabotaging the move by putting it in cold
storage for all practical purposes.

Journalists are not opposed to other
industrial workers getting this benefit. In
fact, they very much support it. They